महाशतक की आक्रोशपूर्ण बात सुनकर रेवती घबरा गई। उसका नशा काफूर हो गया। उसे लगा कि मेरे पति ने मुझे शाप दिया है। मेरा पति धर्म की आराधना करता रहता है। इसी के प्रभाव से इसने मेरे मरने की भविष्यवाणी की है।

वह रोती-पीटती अपने घर आई। ठीक सात दिन बाद अलसक रोग से पीड़ित होने के कारण मरकर वह नरक में उत्पन्न हुई।

जब यह घटना घटी तब प्रभु महावीर राजगृही में ही थे। सर्वज्ञ से कुछ भी छिपा नहीं होता। उन्होंने अपने प्रथम शिष्य इन्द्रभूति गौतम को बुलाकर आज्ञा दी- "गौतम! इस नगरी में महाशतक श्रावक रहता है, वह अवधिज्ञानी है। उसे जाकर मेरा संदेश कहो कि तुम्हें इस प्रकार कटु सत्य अपनी पत्नी रेवती के प्रति नहीं कहने चाहिए।" इस प्रकार का अनिष्ट, अप्रिय वचन, जिसे सुनने से किसी को पीड़ा होती हो, विचार करने पर मन में चुभता हो, नहीं बोलना चाहिए। महाशतक ने रेवती के प्रति आक्रोशपूर्ण व्यवहार कर अपने श्रावक व्रत को दूषित किया है। अतः तुम जाकर उसे (महाशतक से) कहो कि वह अपने इस अविचार की आत्म-आलोचना, आत्म निन्दा करके आत्मा को विशुद्ध बनाए।"

प्रभु महावीर का संदेश लेकर गौतम राजगृह में महाशतक श्रावक के पास आए। महाशतक ने गौतम स्वामी को देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। विनयपूर्वक वन्दना की। महाशतक को भगवान महावीर का संदेश सुनाते हुए कहा- "देवानुप्रिय! तुमने जो इस प्रकार आक्रोशपूर्ण कटु वचन कहकर रेवती की आत्मा को संतृप्त किया, भयभीत किया वह उचित नहीं था। तुम्हारे लिए उस समय मौन रहना उचित था। तुम्हारे क्रोध के कारण तुम्हारा व्रत भंग हुआ है।"

तुम अपनी भूल का प्रायश्चित करो, आलोचना कर आत्मा को निर्दोष बनाओ।"

महाशतक ने अपने शास्ता प्रभु महावीर का संदेश सुना। उसे शिरोधार्य भी किया। अपने गुरु के कथनानुसार अपने क्रोध की आलोचना कर अपनी आत्मा को शुद्ध बनाया।

महाशतक श्रावक ने लम्बे समय तक श्रावक के १२ व्रतों का पालन किया।

अन्तिम समय ६० भक्त का अनशन पूर्ण कर वह सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हुआ।[8]

महाशतक का जीवन बहुत ही क्रान्तिकारी था। उसका घर, परिवार धर्म-कार्य में उसका सहयोगी नहीं था। जिस घर में पत्नी मांस व शराब का सेवन करती हो, तो वहां महावीर के धर्म पर चलना असंभव सा लगता है, पर वह महाशतक धर्म के मार्ग पर अकेला चलने में विश्वास करता था। इस कथा में हमें यह भी प्रेरणा मिलती है कि कटु सत्य से बचना चाहिए।

इस अवसर पर बहुत से पार्श्वापत्य स्थविर भगवान महावीर के समवसरण में आए और उन्होंने कुछ दूर खड़े रहकर प्रश्न किया- "भगवन्! इस असंख्येय लोक में अनन्त रात्रि दिन उत्पन्न हुए, होते हैं और होंगे या परीत्त?"

महावीर- "आर्यो! इस असंख्येय लोक में अनन्त और परीत्त रात्रि दिन उत्पन्न हुए, होते हैं और होंगे तथा अनन्त और परीत्त ही व्यतीत हुए, होते हैं और होंगे।"

स्थविर- "भगवन्! यह कैसे? असंख्येय लोक में अनन्त और परीत्त रात्रि दिन कैसे उत्पन्न हुए और व्यतीत हुए?"

महावीर- "आर्यो! पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हन्त ने कहा है कि लोक शाश्वत अनादि अनन्त है। वह परीत्त (असंख्येय प्रदेशात्मक) और परिवृत्त (अलोकाकाश से व्याप्त) है। नीचे की तरफ विस्तृत, मध्य में

संक्षिप्त औरऊपर के भाग में विशाल है। आकार में वह अधोभाग में पलंग जैसा, मध्य में वज्र जैसा और ऊपरी भाग में ऊर्ध्वमृदंग जैसा है। इस अनादि अनन्त शाश्वत लोक में अनन्त जीवपिण्ड उत्पन्न हो-होकर विलीन होते हैं। परीत्त जीवपिण्ड भी उत्पन्न हो-होकर विलीन होते हैं, अतएव लोक उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यात्मक है। लोक का दूसरा अंश 'अजीवकाय' प्रत्यक्ष होने से लोक प्रत्यक्ष है। लोकवर्ती 'अजीवद्रव्य' प्रत्यक्ष देखा जाता है इसलिए इसको 'लोक' कहते हैं- **''लोक्यते इति लोकः।''**

भगवान महावीर के स्पष्टीकरण से पार्श्वापत्य स्थविरों के मन का समाधान हो गया और उन्हें यह भी विश्वास हो गया कि भगवान महावीर 'सर्वज्ञ' और 'सर्वदर्शी' हैं। वे श्रमण भगवान को वन्दन-नमस्कार कर बोले- ''भगवन्! हम आपके पास चातुर्मास धर्म के स्थान पर पञ्चमहाव्रतात्मक सप्रतिक्रमण धर्म स्वीकार करना चाहते हैं।''

स्थविरों की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए भगवान महावीर ने कहा- ''देवानुप्रियो! तुम सुखपूर्वक ऐसा कर सके हो।''

इसके बाद पार्श्वापत्य स्थविरों ने श्रमण भगवान के पास पंचमहाव्रतिक धर्म स्वीकार किया और बहुत काल तक श्रामण्य धर्म पालकर अन्त में निर्वाण-पद प्राप्त किया।[१९]

रोह अनगार के प्रश्न

उस समय रोह नामक अनगार भगवान से कुछ दूर बैठे तत्व चिन्तन कर रहे थे। लोक-विषयक चिन्तन करते हुए उन्हें कुछ शंका उत्पन्न हुई। वे तुरन्त उठकर भगवान के पास आए और वन्दन कर प्रश्न किया- ''भगवन्! पहले 'लोक' और पीछे 'अलोक' या पहले 'अलोक' और पीछे 'लोक'?''

भगवान-''रोह! 'लोक' और 'अलोक' दोनों पहले भी कहे जा सकते हैं और पीछे भी। ये शाश्वत-भाव हैं। इनमें पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले जीव और पीछे अजीव या पहले अजीव और पीछे जीव?''

भगवान-''रोह! जीव-अजीव भी शाश्वतभाव हैं, इनमें भी पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले भवसिद्धिक और पीछे अभवसिद्धिक या पहले अभवसिद्धिक और पीछे भवसिद्धिक?''

भगवान-''रोह! भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों शाश्वतभाव हैं। इनमें भी पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले सिद्धि और पीछे असिद्धि या पहले असिद्धि और पीछे सिद्धि?''

भगवान-''रोह! यह दोनों शाश्वतभाव हैं। इनमें पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले सिद्ध और पीछे असिद्धि या पहले असिद्धि और पीछे सिद्ध?''

भगवान-''रोह! ये भी शाश्वतभाव हैं। इनमें पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन! पहले अण्डा और पीछे मुर्गी या पहले मुर्गी और पीछे अण्डा?''

भगवान-''रोह! वह अण्डा कहां से हुआ?''

रोह-''मुर्गी से।''

भगवान-''और वह मुर्गी कहां से हुई?''

रोह-''अण्डे से।''

भगवान-''रोह! इसी प्रकार अंडा और मुर्गी दोनों पहले भी कहे जा सकते हैं और पीछे भी। ये शाश्वतभाव हैं। इनमें पहले-पीछे का क्रम नहीं।''

रोह- ''भगवन्! पहले लोकान्त और पीछे अलोकान्त या पहले अलोकान्त और पीछे लोकान्त?''

भगवान-''लोकान्त और अलोकान्त दोनों पहले भी कहे जा सकते हैं और पीछे भी। इनमें पहले पीछे का कोई अनुक्रम नहीं।''

रोह- ''भगवन्! पहले लोक और पीछे सप्तम अवकाशान्तर या पहले सप्तम अवकाशान्तर और पीछे लोक?''

भगवान- ''रोह! दोनों शाश्वत भाव हैं। इनमें पहले पीछे का कोई क्रम नहीं।''

रोह- ''भगवन्! पहले लोकान्त और पीछे सप्तम तनुवात या पहले सप्तम तनुवात और पीछे लोकान्त?''

भगवान-''रोह! ये दोनों शाश्वतभाव हैं, पहले भी कहे जा सकते हैं, पीछे भी। इनमें कोई अनुक्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले लोकान्त और पीछे धनोदधि या पहले धनोदधि और पीछे लोकान्त?''

भगवान-''दोनों शाश्वतभाव हैं। इनमें पहले-पीछे का कोई क्रम नहीं।''

रोह-''भगवन्! पहले लोकान्त और पीछे सप्तम पृथ्वी या पहले सप्तम पृथ्वी और पीछे लोकान्त?''

भगवान-''रोह! ये दोनों शाश्वतभाव हैं। इनमें पहले-पीछे का कोई क्रम नहीं।''

इसी तरह रोह अनगार ने उक्त सभी प्रश्न अलोकान्त के साथ भी पूछे और भगवान ने उत्तर दिए।

रोह-''भगवन्! पहले सप्तम अवकाशान्तर और पीछे सप्तम तुनवात या पहले सप्तम तनुवात और पीछे सप्तम अवकाशान्तर?''

भगवान-''दोनों शाश्वत भाव हैं, इनमें पहले-पीछे का क्रम नहीं है।''

लोकस्थिति के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न

इसी प्रकार रोह ने पूर्व-पूर्व पद छोड़कर उत्तर-उत्तर पद के साथ पहले-पीछे का क्रम पूछा और भगवान ने उत्तर दिया।

भगवान के उत्तरों से रोह अनगार परम संतुष्ट हुआ।

गौतम ने पूछा- ''भगवन्! लोकस्थिति कितने प्रकार की कही है?''

भगवान- ''गौतम! लोकस्थिति आठ प्रकार की होती है, जैसे- (१) आकाश पर हवा प्रतिष्ठित है, (२) हवा पर समुद्र, (३) समुद्र पर पृथ्वी, (४) पृथ्वी पर त्रस-स्थावर प्राणी, (५) (त्रस-स्थावर) जीवों पर अजीव (जीव शरीर), (६) कर्मों पर जीव प्रतिष्ठित हैं, (७) अजीव-जीव संगृहीत हैं और (८) जीव-कर्म संगृहीत हैं।

गौतम- ''भगवन्! यह कैसे? आकाश पर हवा और हवा पर पृथ्वी आदि कैसे प्रतिष्ठित हो सकती है?''

भगवान- ''गौतम! जैसे कोई पुरूष मशक को हवा से पूर्ण भरकर उसका मुंह बंद कर दे, फिर उसको बीच में से मजबूत बांधकर मुंह पर की गांठ खोल हवा निकालकर उसमें पानी भर दे और फिर मुंह पर तानकर गांठ दे दे और बाद में बीच की गांठ छोड़ दे तो वह पानी नीचे की हवा पर ठहरेगा?''

गौतम- ''हां भगवन्! वह पानी हवा के ऊपर ठहरेगा।''

भगवान- "इसी तरह आकाश के ऊपर हवा और हवा के ऊपर पृथ्वी आदि रहते हैं। गौतम! कोई आदमी मशक को हवा से भरकर अपनी कमर में बांधे हुए अथाह जल को अवगाहन करे तो वह ऊपर ठहरेगा या नहीं?"

गौतम- "हां भगवन्! वह मनुष्य ऊपर रहेगा।"

भगवान- "इसी प्रकार आकाश पर हवा और हवा पर पृथ्वी आदि प्रतिष्ठित हैं।"[१०]

तेईसवां वर्ष

इस वर्ष भगवान ने वर्षावास राजगृह में ही किया।

वर्षाकाल पूरा होते ही भगवान ने राजगृह से पश्चिमोत्तर प्रदेश की ओर विहार किया और गांवों में धर्म-प्रचार करते हुए कयंगला नगरी के छत्रपलास चैत्य में पधारे। कयंगला-निवासी तथा आसपास के गांवों के अनेक भाविक लोग भगवान का आगमन सुनकर छत्रपलास में एकत्र हुए और वन्दन नमस्कारपूर्वक धर्म-श्रवण कर अपने-अपने स्थान पर गए।

स्कन्दक परिव्राजक के प्रश्न-समाधान

उस समय श्रावस्ती के समीप एक मठ में गर्दभालि शिष्य कात्यायन गोत्रीय स्कन्दक नामक परिव्राजक रहता था। वह वेद, वेदांग, पुराण आदि वैदिक साहित्य का पारंगत विद्वान तथा तत्वान्वेषी और जिज्ञासु तपस्वी था। जिस समय भगवान छत्रपलास में पधारे स्कन्दक कार्यवश श्रावस्ती आया हुआ था। वहां उसे 'पिंगलक' नामक कात्यायन गोत्रीय एक निर्ग्रन्थ श्रमण मिले। श्रमण पिंगलक ने स्कन्दक से पूछा- "मागध! इस लोक का अन्त है या नहीं? जीव का अन्त है या नहीं? सिद्धि का अन्त है या नहीं? सिद्धों का अन्त है या नहीं? और हे मागध! किस मरण से मरता हुआ जीव बढ़ता और घटता है?" पांचों प्रश्न एक साथ पूछकर निर्ग्रन्थ ने उत्तर की प्रतीक्षा की।

स्कन्दक कात्यायन ने पांचों प्रश्नों को अच्छी तरह सुना और उन पर खूब विचार भी किया परन्तु उनका उत्तर नहीं दे सका। उल्टा वह ज्यों-ज्यों उन पर विचार करता जाता, शंकाकुल हो विशेष उलझता जाता। पिंगलक ने दूसरी और तीसरी बार भी उन प्रश्नों की आवृत्ति की, पर स्कन्दक की तरफ से कोई उत्तर नहीं मिला।

ठीक इसी समय भगवान महावीर के छत्रपलास चैत्य में पधारने के समाचार श्रावस्ती में पहुंचे। चौक, बाजार, मुहल्ले और गलियों में उनकी चर्चा होने लगी और क्षणभर में श्रावस्ती की आस्तिक प्रजा से छत्रपलास के मार्ग भर गए।

नगरवासियों की यह चर्चा और प्रवृति कात्यायन स्कन्दक ने देखी और वे भी सावधान हो गए। ज्ञानी महावीर के पास जाकर वन्दन-नमस्कार और धर्मचर्चा करने के विचार से वे श्रावस्ती से जल्दी लौटकर अपने आश्रम में आए और गेरूआ वस्त्र धारणकर त्रिदंड, कुण्डिका, कञ्चनिका, कटोरिका, विसिका, केसरिका, छन्नालक, अंकुशक, पवित्रिका तथा गणेत्रिका ले पादुकाएं पहन आश्रम से निकले और श्रावस्ती के मध्य में होते हुए छत्रपलास चैत्य की सीमा में पहुंचे।

उधर भगवान महावीर ने गौतम से कहा- "गौतम! आज तुम अपने एक पूर्व परिचित को देखोगे।"

गौतम- "भगवन्! मैं किस पूर्व परिचित को देखूंगा?"

महावीर- "आज तुम कात्यायन गोत्रीय स्कन्दक परिव्राजक को देखोगे।"

गौतम- ''भगवन्! यह कैसे? स्कन्दक यहां कैसे मिलेगा?''

महावीर- ''श्रावस्ती में पिंगलक निर्ग्रन्थ ने स्कन्दक से कुछ प्रश्न पूछे थे, जिनका उत्तर वह नहीं दे सका। फिर हमारा यहां आगमन सुनकर वह अपने आश्रम में लौट गया और वहां से गेरूआ वस्त्र पहन त्रिदण्ड, कुण्डिकादि उपकरण ले यहां आने के लिए प्रस्थान कर चुका है। तुम्हारा पूर्व-परिचित स्कन्दक अभी मार्ग में आ रहा है। वह अब बहुत दूर नहीं, थोड़े ही समय में तुम्हें दृष्टिगोचर होगा।''

गौतम- ''भगवन्! क्या कात्यायन स्कन्दक में आपका शिष्य होने की योग्यता है?''

महावीर- ''स्कन्दक में शिष्य होने की योग्यता है और वह हमारा शिष्य हो जाएगा।''

भगवान महावीर और गौतम का वार्त्तालाप हो ही रहा था कि इतने में स्कन्दक समवसरण के निकट आ पहुंचे। उन्हें देखते ही गौतम उठे और सामने जाकर स्वागत करते हुए बोले- ''मागध! क्या यह सच है कि श्रावस्ती में पिंगल निर्ग्रन्थ ने आपसे कुछ प्रश्न पूछे थे और उनका ठीक उत्तर न सूझने पर उसके समाधान के लिए आपका यहां आना हुआ है?''

स्कन्दक- ''बिल्कुल ठीक है। पर गौतम! ऐसा कौन ज्ञानी और तपस्वी है जिसने मेरे दिल की यह गुप्त बात तुम्हें कह दी?''

गौतम- ''महानुभाव स्कन्दक! मेरे धर्माचार्य भगवान महावीर ऐसे ज्ञानी और तपस्वी हैं जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल के सब भावों को जानते और देखते हैं। इन्हीं महापुरूष के कहने से मैं तुम्हारे दिल की गुप्त बात जान सका हूं।''

स्कन्दक- ''अच्छा, तब चलिए गौतम, तुम्हारे धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर को वन्दन कर लूं।''

गौतम- ''बहुत अच्छा, चलिए।''

इन्द्रभूति गौतम और स्कन्दक दोनों भगवान महावीर के पास पहुंचे। स्कन्दक की दृष्टि उनके तेजस्वी शरीर पर पड़ते ही उनके अलौकिक रूप, रंग और तेज से वह आश्चर्य चकित हो गया। महातपस्वी, महाज्ञानी और दिव्य तेजस्वी महावीर के दर्शनमात्र से स्कन्दक का हृदय हर्षावेग से भर गया। वे भगवान महावीर के निकट आए, वन्दन किया और हाथ जोड़कर सामने खड़े हो गए।

स्कन्दक के मनोभाव को प्रकट करते हुए महावीर ने कहा- ''स्कन्दक! पिंगलक के लोक सादि है या अनन्त?'' इत्यादि प्रश्नों से तुम्हारे मन में संशय उत्पन्न हुआ है?''

स्कन्दक- ''जी हां, इस विषय में मेरा मन शंकित है और इसलिए आपके चरणों में आया हूं।''

महावीर- ''स्कन्दक! द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव-भेद से लोक चार प्रकार का है। द्रव्य स्वरूप से लोक सान्त (अन्तवाला) है, क्योंकि वह धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय रूप केवल पञ्च द्रव्यमय है। क्षेत्रस्वरूप से लोक असंख्यात योजन कोटाकोटि लंबा, असंख्यात योजन कोटाकोटि चौड़ा और असंख्यात योजन कोटाकोटि विस्तृत है, फिर भी वह सान्त है। कालस्वरूप से लोक अनन्त, नित्य और शाश्वत है क्योंकि वह पहले था, अब है और आगे रहेगा। त्रिकालवर्ती होने से कालात्मक लोक अनन्त है और भावस्वरूप से भी लोक अनन्त है, क्योंकि वह अनन्त वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, संस्थान, गुरू-लघु और अगुरू लघु पर्यायात्मक है, अनन्त पर्यायात्मक होने से भावलोक 'अनन्त' है। जीव भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावस्वरूप से विचारणीय है। द्रव्यस्वरूप से जीव-द्रव्य एक होने से सान्त है। क्षेत्रस्वरूप से जीव असंख्यात प्रदेशिक और असंख्य आकाशप्रदेशव्यापी है, तथापि वह सान्त है। कालस्वरूप से जीव अनन्त है, क्योंकि यह पहले था, अब है और भविष्य में रहेगा, त्रिकालवर्ती होने

से कालापेक्षा जीव नित्य (शाश्वत) है। भावस्वरूप से भी जीव अनन्त है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र के अनन्तानन्त पर्यायों से भरपूर और अनन्त अगुरु-लघु पर्यायस्वरूप होने से भाव से जीव अनन्त है।

स्कन्दक! इसी प्रकार सिद्धि भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव इन चार प्रकारों से विचारणीय है। द्रव्यस्वरूप से सिद्धि एक होने से सान्त है। क्षेत्रस्वरूप से सिद्धि पैंतालीस लाख योजन लंबी-चौड़ी और एक करोड़ बयालीस लाख तीस हजार दो सौ योजन और कुछ कम दो कोस की परिधि वाली है। कालस्वरूप से सिद्धि अनन्त है, इसका पहले कभी अभाव नहीं था, वर्तमान में अभाव नहीं है और भविष्य में कभी अभाव नहीं होगा। यह शाश्वत है और रहेगी। भावस्वरूप से भी अनन्त पर्यायात्मक होने से सिद्धि अनन्त है।

सिद्ध भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के भेद से चार प्रकार के हैं। द्रव्यापेक्षा सिद्ध एक होने से सान्त है। क्षेत्रविचार से सिद्ध असंख्य-प्रदेशात्मक तथा असंख्याकाश प्रदेशव्यापी होने पर भी सान्त है। कालस्वरूप से सिद्ध की आदि होने पर भी उसका अन्त नहीं होता। अतः वह अनन्त है। भावस्वरूप से सिद्ध अनन्त है, क्योंकि वह अनन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र और अगुरु-लघु पर्यायमय होता है।

स्कन्दक! मैंने दो तरह के मरण कहे हैं- एक बालमरण और दूसरा पंडितमरण। बालमरण के बारह भेद हैं- (१) भूख की पीड़ा से तड़पकर, (२) विषय भोग की अप्राप्ति से निराश होकर, (३) जीवनभर में किए हुए पापों को हृदय में गुप्त रखकर, (४) वर्तमान जीवन की विशेष सफलता न कर फिर इसी गति का आयुष्य बांधकर, (५) पर्वत से गिरकर, (६) वृक्ष से गिरकर, (७) जल में डूबकर, (८) अग्नि में जलकर, (९) विष खाकर, (१०) शस्त्र प्रयोग से, (११) फांसी लगाकर, और (१२) गीध पक्षी अथवा अन्य मांसभक्षी पक्षियों से नुचवाकर मरना।

स्कन्दक! इन बारह प्रकार के मरणों में से किसी भी मृत्यु से मरता हुआ जीव नरक और तिर्यञ्चगति का अधिकारी और चतुर्गत्यात्मक संसार-भ्रमण को बढ़ाता है। मरण से बढ़ना इसी को कहते हैं।

पण्डितमरण के दो भेद हैं (१) पादपोपगमन, और (२) भक्त -प्रत्याख्यान।

आयुष्य का अन्त निकट जानकर खड़े-खड़े, बैठे-बैठे अथवा सोते सोते जिस आसन में अनशन स्वीकार किया जाए, उसी आसन में अन्त तक रहकर शुभ ध्यानपूर्वक प्राण त्याग करना पादपोपगमन मरण है।

अनशन करके भी दूसरी चेष्टाओं का त्याग न कर अपनी आवश्यक क्रियाओं को करते हुए समाधिपूर्वक प्राण-त्याग करना भक्त-प्रत्याख्यान मरण है।

स्कन्दक! इन पंडितमरणों से मरते हुए ज्ञानी मनुष्य नरक-तिर्यञ्चगति के भ्रमण कम कर देते हैं और इस अनादि अनन्त दीर्घ संसार को कम करके मुक्ति के निकट जा पहुंचते हैं।''

इस स्पष्टीकरण से प्रतिबुद्ध हो स्कन्दक ने भगवान महावीर को वन्दन कर निर्ग्रन्थ प्रवचन का विशेष उपदेश सुनने की इच्छा प्रकट की। भगवान महावीर ने उसी समय स्कन्दक तथा अन्य उपस्थित महानुभावों के समक्ष निर्ग्रन्थ धर्म का उपदेश दिया जिसे सुनकर स्कन्दक आनन्दित होकर बोले- ''भगवान! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन को चाहता हूं, मैं इस पर पूर्ण श्रद्धा करता हूं, आपका कथन निस्संदेह सत्य है। मैं आपके प्रवचन को स्वीकार करता हूं।'' यह कहकर स्कन्दक ईशानकोण की तरफ कुछ दूर गए और त्रिदण्ड, कमण्डलु, पादुका आदि परिव्राजकोपकरणों को एकान्त में छोड़ फिर भगवान महावीर के पास आए और वन्दन कर बोले- ''भगवान! यह संसार चारों ओर से आग में जलते हुए घर के समान

है। जलते घर में जो भी सारभूत पदार्थ हाथ लगे, उसे लेकर गृहस्वामी बाहर निकल जाता है। हे भगवन्! इस जलते हुए संसार दावानल में 'आत्मा' ही मेरा सर्वस्वहै। इसको बचाने के लिए इस दावानल तुल्य संसार से दूर होना ही मेरे लिए हितकर है।'' यह कहकर स्कन्दक ने महावीर के पास श्रमणधर्म की दीक्षा ली।

श्रमण भगवान ने उसे निर्ग्रन्थ मार्ग में प्रविष्ट कर तत्संबन्धी शिक्षा और समाचारी से परिचय कराया।

भगवान महावीर की सेवा में रहते, श्रमणधर्म की आराधना करते और जिन-प्रवचन का अभ्यास करते हुए अनगार स्कन्दक ने एकादशाङ्गी का अध्ययन किया।

कात्यायन स्कन्दक पहले से ही तपस्वी थे। भगवान महावीर के पास दीक्षित होने के बाद वे और भी विशिष्ट तपस्वी हो गए, भिक्षु-प्रतिमा, गुणरत्न-संवत्सर तप आदि विविध तप और विशिष्ट साधनाओं से कर्मक्षय करने में स्कन्दक ने शक्ति भर प्रयत्न किया और पूरे १२ वर्ष तक श्रामण्य पालने के उपरान्त स्कन्दक अनगार ने अन्त में विपुलाचल पर्वत पर जाकर अनशन कर दिया और समाधिपूर्वक देह छोड़ 'अच्युत कल्प' नामक स्वर्ग में देवपद प्राप्त किया। वहां से महाविदेह में मनुष्य जन्म पाकर पुनः धर्म की आराधना से निर्वाणपद प्राप्त करेंगे।[9]

इधर छत्रपलास चैत्य से विहार कर भगवान श्रावस्ती के कोष्ठक चैत्य में पधारे। भगवान महावीर के आगमन पर श्रावस्ती की प्रजा आपके दर्शन-वन्दन के लिए उमड़ पड़ी। श्रमण भगवान महावीर की धर्मदेशना से अनेक भाविक मनुष्यों को धर्म-प्राप्ति हुई, अनेक गृहस्थों ने गृहस्थ धर्म के व्रत लिए। जिनमें गाथापति नन्दिनी पिता, उसकी स्त्री अश्विनी १२ करोड़ स्वर्ण-मुद्राएं और ४ व्रज गाएं थीं।

श्रावस्ती से भगवान विदेह भूमि की तरफ पधारे और वाणिज्यग्राम में जाकर वर्षावास किया।

चौबीसवां वर्ष

वर्षाकाल पूर्ण होने पर भगवान महावीर वाणिज्यग्राम से ब्राह्मणकुण्ड के बहुसाल चैत्य में पधारे। यहां पर जमालि अनगार को अपने पांच सौ शिष्यों के साथ पृथक विहार करने की इच्छा हुई, वे उठे और भगवान महावीर को वन्दन कर बोले- ''भगवन्! आपकी आज्ञा से मैं अपने शिष्य परिवार के साथ पृथक विहार करना चाहता हूं।'' जमालि की इस प्रार्थना का भगवान महावीर ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

जमालि ने दूसरी, तीसरी बार भी इसी तरह वन्दनपूर्वक पृथक् विहार की आज्ञा मांगी परन्तु श्रमण भगवान की तरफ से उसे कोई उत्तर नहीं मिला, तब जमालि बिना आज्ञा ही **मौनं सम्मति लक्षणं** मान अपने अनुयायी ५०० साधुओं के साथ बहुसाल चैत्य से निकल गया। ब्राह्मणकुण्ड से श्रमण भगवान महावीर ने वत्सभूमि में प्रवेश किया और निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रचार करते हुए कौशांबी पधारे। यहां पर आपको सूर्य और चन्द्र वन्दन करने के लिए पृथ्वी पर आए।

कौशांबी से काशी राष्ट्र में से होकर भगवान महावीर राजगृह के गुणशील चैत्य में पधारे। उन दिनों कुछ पार्श्वपत्य स्थविर ५०० अनगारों के साथ विचरते हुए राजगृह के निकटवर्ती तुंगिया नगरी के पुष्पवतीय चैत्य में आए हुए थे। स्थविरों का आगमन सुनकर तुंगिया के अनेक श्रमणोपासक वन्दन तथा धर्मोपदेश श्रवण करने के लिए उद्यान में गए। श्रमणोपासक तथा सभा के सामने स्थविरों ने चातुर्मास धर्म का उपदेश दिया जिसे सुनकर श्रमणोपासक संतुष्ट हुआ और फिर पूछा- ''भगवन्! संयम का फल

क्या है और तप का फल क्या है?''

स्थविर- ''आर्यो! संयम का फल है 'अनास्रव' और तप का फल है 'निर्जरा'।''

श्रमणोपासक- ''भगवन्! यदि संयम का फल अनास्रव है और तप का फल 'निर्जरा' है तो देवलोक में देव किस कारण से उत्पन्न होते हैं?''

कालियपुत्र स्थविर- ''आर्यो! प्राथमिक तप से देवलोक में देव उत्पन्न होते हैं।''

मेहिल स्थविर- ''आर्यो! प्राथमिक संयम से देवलोक में देव उत्पन्न होते हैं।''

आनन्दरक्षित स्थविर- ''आर्यो संगिकता (आसक्ति) से देवलोक में देव उत्पन्न होते हैं। पूर्वतप, पूर्वसंयम, कार्मिकता और संगिकता से देवलोक में देव उत्पन्न होते हैं।''

स्थविरों के उत्तर सुनकर श्रमणोपासक बहुत प्रसन्न हुए और स्थविरों को वन्दन कर अपने-अपने स्थान पर गए। बाद में स्थविर भी वहां से विहार कर अन्यत्र चले गए।

उसी समय इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर की आज्ञा ले राजगृह में भिक्षाचर्या के लिए निकले। ऊंच, नीच, मध्यम कुलों में भिक्षाटन करते हुए उन्होंने पूर्वोक्त पार्श्वापत्य स्थविरों से तुंगीया के श्रमणोपासकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों और स्थविरों के उत्तर ठीक हैं या नहीं, इसका निर्णय करने का विचार कर वे भगवान के पास गए। भिक्षाचर्या की आलोचना करने के बाद उन्होंने पूछा- ''भगवन्! मैंने राजगृह में स्थविरों के प्रश्नोत्तर संबंधी जो चर्चा सुनी है, क्या वह ठीक है? स्थविरों ने जो उत्तर दिए, क्या वे ठीक हैं? ऐसे उत्तर देने में वे समर्थ हो सकते हैं?''

भगवान महावीर ने कहा- ''गौतम! तुंगिया-निवासी श्रमणोपासकों के प्रश्नों के पार्श्वापत्य स्थविरों ने जो उत्तर दिए हैं वे यथार्थ हैं। उन्होंने जो कुछ कहा सत्य है। हे गौतम! इस विषय में मेरा भी यही सिद्धान्त है कि पूर्व-तप तथा पूर्व-संयम से देव देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

चन्द्र-सूर्य का आगमन

प्रभु महावीर ने ब्राह्मणकुण्डग्राम से वत्स देश की ओर विहार किया। वह कौशाम्बी नगर में पधारे। यहां एक आश्चर्यजनक घटना घटी। चन्द्र व सूर्य दोनों देव प्रभु महावीर के दर्शन को आए।

सूर्य देव के आगमन से धरती पर तेज प्रकाश छा गया। जबकि सूर्य जा चुका था। अचानक रात्रि का आगमन हुआ। वहां साध्वी मृगावती सूर्य के भ्रम के कारण बैठी प्रवचन सुन रही थी। अब अचानक अंधकार से वह घबरा गई। क्योंकि अकेली साध्वी को रात्रि के समय उपाश्रय से निकलना मना है।

साध्वी मृगावती की गुरुणी साध्वी प्रमुखा चन्दना थी, जो साध्वियों के उपाश्रय में साध्वी मृगावती का इंतजार करते-करते सो चुकी थी। साध्वी मृगावती का मन इस दुःख से भर गया कि मेरे से कितनी बड़ी गलती प्रमादवश हो गई है, मुझे ध्यान रखना चाहिए था कि दिन डूब रहा है। अब मेरी गुरुणी मेरे से नाराज होंगी।

इसी दुविधा में डूबी साध्वी मृगावती उपाश्रय में पहुंची। सभी साध्वियां सो चुकी थीं। साध्वी मृगावती आत्म-ध्यान में लीन हुई उपाश्रय में पहुंची, तो शुभ अध्यवसाय के परिणामस्वरूप उसे केवलज्ञान प्राप्त हो गया। अब अंधेरे की जगह उसे प्रकाश नजर आ रहा था चाहे उपाश्रय गहन अंधकार में डूबा हुआ था। वह ज्यों ही बैठने लगी, तो उसने देखा कि एक सांप चन्दनबाला के शरीर के पास आ रहा है। उसने चन्दन को स्पर्श करते हुए उठाया। साध्वी चन्दनबाला उठी। उसने पूछा- ''मेरे शरीर का स्पर्श किसने